# ख़ौफ़नाक शर्मिन्दगी

**कात्यायनी**

कैसा अजीब ख़ौफ़नाक मौसम है कि
बेहद सादगी से अगर कोई सीधा-सादा इंसान
कोई सीधी-सच्ची बात कह दे
तो लोग उसे यूँ देखते हैं जैसे वह
सीधे मंगल ग्रह से चला आया हो।
पेड़ों की नंगी टहनियों पर अगर कहीं
नये पत्ते दिख जायें
तो अचरज से या डर से
लोगों की आँखें फटी रह जाती हैं।
जिस शहर में साल भर के भीतर
एक भी औरत के गुप्तांग में
न पत्थर भरे गये हों न सरिया घुसेड़ा गया हो,
एक भी औरत के चेहरे पर
तेजाब न फेंका गया हो,
एक भी औरत को सामूहिक बलात्कार के बाद
बोटी-बोटी न काटा गया हो,
एक भी प्रेमी जोड़े को पंखे या पेड़ या
बिजली के खंभे से न टाँगा गया हो,
एक भी दंगा, या मॉब लिंचिंग का
एक भी मामला न हुआ हो,
सौ-पचास घरों पर भी बुलडोजर न चले हों,
एक भी भव्य मंदिर या एक भी विशाल स्टैच्यू
या एक भी अद्वितीय रिवरफ्रण्ट
निर्माणाधीन न हो,
एक भी मुसलमान देशद्रोही होने
या पाकिस्तान से रिश्ते के पुख़्ता सबूतों के साथ
पकड़ा न गया हो,
एक भी कवि या लेखक ख़ुद को
वामपंथी कहते-कहते
फ़ासिस्टों की अकादमी या किसी सेठ के
प्रतिष्ठान से पुरस्कृत होने
या किसी रंगारंग साहित्यिक मेले में शामिल होने
अचानक राजधानी न चला गया हो,
उस शहर के लोग लगभग देशद्रोही जैसा ही
समझते हैं अपने आप को।
वे इतनी शर्मिन्दगी और ज़िल्लत से
भरे रहते हैं कि दूसरे किसी शहर
अपने किसी रिश्तेदार या दोस्त से
मिलने तक नहीं जाते
और अगर अपने शहर से बाहर उन्हें
जाना ही पड़े किसी वजह से
तो वे किसी अनजान को यह कतई नहीं बताते
कि वे किस शहर के रहवासी हैं!
सिर्फ़ इतना ही नहीं, अपने शहर की
सड़कों पर भी वे बहुत कम निकलते हैं
और अगर निकलते भी हैं
तो नज़रें झुकाये, एक-दूसरे से बचते हुए
बगल से निकल लेते हैं
या किसी परिचित से नज़रें मिलने से पहले ही
बाजू वाली गली में मुड़ जाते हैं।
ऐसे शहर के बच्चे तक सोचते हैं इनदिनों
कि आख़िर वे गर्व करें तो किस बात पर करें
जियें तो कैसे जियें
और कैसे करके खौलायें अपना ख़ून
और ख़ुद को और सभी देशभक्तों को
यक़ीन दिलायें कि उनकी रगों में भी जो
बह रहा है वह पानी नहीं ख़ून है
एकदम शुद्ध और पवित्र धार्मिक लहू!

# कविता की सफलता

**कात्यायनी**

**क**विता अगर ज़िन्दगी की तकलीफ़ों को, नाउम्मीदियों को, शिकस्तों को, उम्मीदों को, खुशियों को, कामनाओं को, सपनों को बिना किसी बनाव-सिंगार के बयान कर पाने में और लोगों तक पहुँचा पाने में सफल हो जाती है, तो यह उसकी सबसे बड़ी सफलता होती है।

कविता ज़िन्दगी में सुन्दरता और प्यार की दुर्निवार चाहत है। यह दुर्निवार चाहत ही कविता को तमाम मानवद्रोही शक्तियों के विरुद्ध अविराम संघर्ष की विकल पुकार बनने तक लेकर जाती है।

हत्याओं के मौसम में शान्तिपाठ से अधिक घृणित, अकर्मक सिद्धान्त-चर्वण से अधिक अमानवीय और कविता में कलादेवियों के साथ विहार और अभिसार से अधिक जुगुप्सोत्पादक भला और क्या हो सकता है! जब कविता को निराशा के घटाटोप में, दूर किसी घाटी से आती ज़िन्दगी की पुकार बनना है, जब इसे जिजीविषा और युयुत्सा -- इन दो शब्दों के विस्मृत अर्थों को चेतना और कर्म की दुनिया में वापस खींच लाना है, ऐसे समय में इसे उन लोगों के दरबार में लेकर जाने की भला सोची भी कैसे जा सकती है जो प्यार और सुन्दरता के सबसे बर्बर शत्रु हैं, जो मनुष्यता के भविष्य के शत्रु हैं!

दयनीयता की हद तक शालीन, सुसंस्कृत और मासूम लग रहे इन चेहरों के पीछे के असली चेहरों को पहचानना ही होगा जो प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, शान्ति और मनुष्यता की बातें करते हुए फ़ासिस्ट बर्बरता के रक्त और अंधकार सने, गुज़रे तीन दशकों की कविता में इंदराजी करने से बच रहे हैं और सत्ता और संस्कृति के लकदक प्रतिष्ठानों और जगमग जलसों में जाकर गा-बजा रहे हैं तथा ईनाम और बख़्शीश ले रहे हैं।

उन थोबड़ों को भी पहचानना होगा जो इन सवालों को उठाते ही सिकुड़ -पिचक जा रहे हैं और दोनों ओर %हाँ में हाँ% मिलाने वाले शातिर दोमुँहेपन की तथा चालाक चुप्पियों की भी शिनाख़्त करनी होगी।

कला-साहित्य की दुनिया में मौसम कुछ ऐसा चल रहा है कि सबसे साफ़-ओ-शफ़्फ़ाफ़ आस्तीनों को भी अगर झटके से पलट दिया जाये तो उनमें से कइयों पर ख़ून के धब्बे साफ़ नज़र आ जायेंगे!

भद्र समाज की बहुतेरी औपचारिक मैत्रियाँ, और कुछ जेनुइन मैत्रियाँ भी, खोकर अगर हम आज इस सवाल को नहीं उठाते तो भविष्य में घृणास्पद उदारतावादी होने का अभियोग लगाते हुए इतिहास हमें भी निश्चय ही, कटघरे में खड़ा करेगा !

**( डायरी के नोट्स, 1जनवरी 2023 )**

# थोक में सम्मान

**कविता कृष्णपल्लवी**

**यह किस्सा कुछ वर्षों पहले सुनाया था, लेकिन इनदिनों शहर-शहर में जितनी संस्थाएँ बन रही हैं और जिस तरह थोक भाव से पुरस्कार, सम्मान वगैरह दिये जा रहे हैं, उसे देखते हुए इसे फिर से सुनाने को तबीयत मचल रही है! फिर आप कर भी क्या सकते हैं! सुनना ही पड़ेगा!**

**शहर न बहुत छोटा था, न बहुत बड़ा। वहाँ एक प्रॉपर्टी डीलर, एक शेयर ब्रोकर, एक ट्रांसपोर्टर, एक होटल मालिक और एक चिट फंड कंपनी का मालिक -- इन पाँच लोगों की एक मित्र- मण्डली थी ।**

**खूब पैसा कमाने, दारूबाजी करने, आवारागर्दी करने और गोवा से लेकर बैंकाक तक के चक्कर लगा चुकने के बाद उन्होंने कुछ नया करने का तय किया ।**

**राजनीति में उतरने का एक विकल्प था लेकिन ऐसा तो उन जैसे बहुत लोग पहले से करते रहे थे । वे एकदम कुछ नया करना चाहते थे -- एकदम लीक से हटकर!**

**काफ़ी सोचने के बाद उन्होंने साहित्य सेवा के लिए एक संस्था बनाने का तय किया और योग्य साहित्य-प्रेमी बनने के लिए शहर के एक आलोचक को अपना सवैतनिक सलाहकार बना लिया ।**

**संस्था गठित हो गयी । कोष बन गया। उद्देश्य तय हो गये ।**

**संस्था की कई योजनाओं में से सबसे महत्वाकांक्षी योजना सालाना किसी कवि या लेखक को एक मोटी रकम देकर पुरस्कृत करने की और सात दिनों की यूरोप-यात्रा पर भेजने की थी ।**

**पहले वर्ष यह पुरस्कार गजानन माधव मुक्तिबोध को देने की घोषणा की गयी ।**

**पुरस्कार समारोह का आयोजन होटल मालिक के होटल के बैंक्वेट हॉल में निर्धारित तिथि को जब किया गया तो वहाँ पुरस्कार लेने के लिए कुल सत्ताइस मुक्तिबोध पहुँचे हुए थे ।**

# तुझमें नयापन क्या है ?

**ऐ नए साल बता, तुझमें नयापन क्या है**
**हर तरफ़ ख़ल्क़ ने क्यूँ शोर मचा रक्खा है**

**रौशनी दिन की वही, तारों भरी रात वही**
**आज हम को नज़र आती है हर इक बात वही**

**आसमाँ बदला है, अफ़सोस, ना बदली है ज़मीं**
**एक हिंदसे का बदलना कोई जिद्दत तो नहीं**

**अगले बरसों की तरह होंगे क़रीने तेरे**
**किस को मालूम नहीं बारह महीने तेरे**

**जनवरी, फ़रवरी और मार्च पड़ेगी सर्दी**
**और अप्रैल, मई, जून में होगी गर्मी**

**तेरा मन दहर में कुछ खोएगा, कुछ पाएगा**
**अपनी मीआद बसर कर के चला जाएगा**

**तू नया है तो दिखा सुबह नयी, शाम नयी**
**वरना इन आँखों ने देखे हैं नए साल कई**

**बे-सबब देते हैं क्यूँ लोग मुबारकबादें**
**ग़ालिबन भूल गए वक़्त की कड़वी यादें**

**तेरी आमद से घटी उम्र जहाँ में सब की**
**'फ़ैज़' ने लिक्खी है यह नज़्म निराले ढब की**

**- फ़ैज़ लुधियानवी**

**ख़ल्क़ = मानवता, हिंदसे = संख्या, जिद्दत = नया-पन, अगले = पिछले/गुज़रे हुए, क़रीने = क्रम, दहर = दुनिया, मीआद = मियाद/अवधि, बे-सबब = बे-वजह, ग़ालिबन = शायद, आमद = आना, ढब = तरीक़ा**